पाठ 19. सरिता का जल

कविता का उद्देश्य

प्रस्तुत कविता का उद्देश्य बच्चों को नदियों के महत्व के बारे में जानकारी देना है। नदी मनुष्य को अपनी तरह गतिशील बनने के लिए प्रेरित करती रहती है।

कविता का सारांश

सरिता का जल स्वच्छ और शीतल होता है। हिमखंडों के पिघलने से दूध जैसा जल धरती पर आ गया है और कलकल करता हुआ बह रहा है। यह तन से चंचल है और लगातार बहता रहता है। न जाने कितनी बाधाओं को पार करती हुई जल की यह धार आगे बढ़ती है। पेड़ों की जड़ों को सींचते हुए तथा पथिक की प्यास बुझाते हुए सरिता का जल बहता रहता है। प्रतिपल चलने पर भी यह थकता नहीं है अपितु अपनी शीतलता बनाए रखता है। गंगा, यमुना आदि नदियों में यह जल युगों-युगों से बहता चला आ रहा है। इसकी निर्मलता सदियों से बनी हुई है और इसके आँचल में असीम वात्सल्य भरा हुआ है।

अध्यापन संकेत

कविता का सस्वर वाचन करें। बच्चों से भी इसी प्रकार कविता वाचन करवाएँ। बच्चों से कविता का मूल भाव पूछें। कठिन शब्दों का अर्थ समझाएँ। कविता की पंक्तियों का भावार्थ समझाएँ—

निर्मल जल .... बहता जल।—इन पंक्तियों का भावार्थ यह है कि नदी का निर्मल एवं स्वच्छ जल तेज़ धारा के साथ बहता हुआ न जाने कितनी पर्वत शृंखलाएँ पार करता जाता है। इसकी धारा में बहुत शक्ति होती है। कभी धाराएँ अपने तीव्र वेग के कारण ऊँची-ऊँची उछाल भरती हैं, कभी एकदम शांत हो जाती हैं परंतु फिर भी लगातार बहती जाती हैं। छोटी-सी नदी का जल अपने अंदर न जाने कितना वेग समाए हुए है।

मिलता है .... बहता जल।—इन पंक्तियों का भावार्थ यह है कि नदी के बहते हुए जल को रास्ते में बाधा के रूप में न जाने कितने पत्थर मिलते हैं। अपने रास्ते की बाधाओं को देखते ही नदी की धारा क्रोध और दुख से बेचैन हो उठती है और ज़ोर-ज़ोर से शोर करते हुए बार-बार उन पत्थरों पर टक्कर मारती है। वह निरंतर अपने रास्ते की बाधाओं को हटाने का प्रयास करती रहती है। नदी की धारा की तरह हमें भी अपने रास्ते में आने वाली बाधाओं को दूर करने का प्रयत्न करते रहना चाहिए।

हिम के पत्थर .... बहता जल।—इन पंक्तियों का भावार्थ यह है कि पर्वत-पहाड़ से बर्फ़ पिघल-पिघलकर धरती पर जल की निर्मल धारा बनकर बहती है। लगातार बहते हुए भी नदी का जल बहुत ही शीतल और स्वच्छ रहता है जिसे पीकर राही अपनी प्यास बुझाता है और सुख-संतोष पाता जाता है।

कितना कोमल .... बहता जल।—इन पंक्तियों का भावार्थ यह है कि गंगा, यमुना, सरयू आदि सभी नदियाँ जिन्हें हम अपनी माँ कहते हैं, अपने हृदय में कितनी कोमलता, कितनी करुणा, कितना वात्सल्य लिए हैं इसका पता इन नदियों के शीतल जल के स्पर्श मात्र से हो जाता है। ये नदियाँ युगों-युगों से बहती आ रही हैं और मानव को अपना स्नेह-ममत्व देती आ रही हैं। इन पंक्तियों में छिपा मूल भाव यह है कि नदियों को हम अपनी माँ मानते हैं परंतु फिर भी उन्हें प्रदूषित कर रहे हैं। हमें नदियों को प्रदूषित होने से बचाना होगा।

पाठ से संबंधित कुछ विशेष बातों पर बच्चों से विचार-विमर्श करें –

- ❖ नदियों के प्रदूषित होने के क्या-क्या कारण है? बताइए।
- ❖ मानव ने अपने लिए सभी सुविधाएँ जुटा ली हैं। मान लो, यदि सारी नदियाँ सूख जाएँ, तब क्या होगा! क्या मानव इसका भी कोई उपाय ढूँढ़ सकता है? सोचकर बताइए।
- ❖ बहता हुआ जल स्वच्छ होता है। ऐसा क्यों? यदि जल एक ही स्थान पर रुका रहे तब क्या वह स्वच्छ नहीं रहेगा?

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।